International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

शैलेश मटियानी के कथा–साहित्य में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति

डॉ० मीनू जोशी
प्रयाग–सदन,
तल्ला दनिया,अल्मोड़ज्ञं
minujoshi12@gmail.com

सारांश–
शैलेश मटियानी हिन्दी साहित्य के ऐसे सशक्त कथाकार हैं, जिनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना का व्यापक स्वरुप परिलक्षित होता है। उन्होंने समाज के हाशिए पर खड़े,उपेक्षित, शोषित तथा संघर्षशील मनुष्यों के जीवन को अपनी रचनाओं का केन्द्र बनाया, उनकी संवेदना केवल करुणा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मुनष्य के अस्तित्व, उसकी गरिमा, संघर्ष, आशा और जिजीविषा की संवेदना है। मटियानी ने अपने कथा–साहित्य में ग्रामीण, आंचलिक, नगरीय तथा निम्नवर्गीय जीवन के विविध–आयामों को प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में स्त्री, दलित, मजदूर, विस्थापित और अभावग्रस्त वर्ग के जीवनानुभवों का सशक्त चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में शैलेश मटियानी के साहित्य में निहित संवेदना के विविध पक्षों – मानवीय करुणा, सामाजिक चेतना, स्त्री–संवेदना, लोक–संवदेना,तथा पर्वतीय जीवन बोध का विश्लेषण किया है।

मुख्य शब्द –
शैलेश मटियानी, संवेदना, मानवीय करुणा, स्त्री–संवेदना, सामाजिक यथार्थ, कथा–साहित्य, जीवन–संघर्ष।

प्रस्तावना–
शैलेश मटियानी के साहित्य–सृजन का मुख्य आधार संवेदनशीलता ही है, जो उनकी रचनाशैली को अत्यधिक प्रभावशाली व आकर्षक बनाती है, मटियानी के संघर्षशील जीवन का एकमात्र लक्ष्य लेखक बनना था। उन्होंने अनेक विशिष्ट ही नहीं अति विशिष्ट साहित्य सृजन किया। पारिवारिक विषम स्थितियों के कारण वे अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाए थे, परंतु उनके भाषा–जीवन संघर्ष से निखरी दृष्टि व संवेदना से संपन्न हृदय था। मटियानी ने अपार जीवनानुभव व मार्मिक संवेदनशीलता से ही हिन्दी साहित्य जगत को अविस्मरणीय रचनाएं दीं। दामोदर दत्त दीक्षित लिखते हैं, "कि अच्छे रचनाकार के लिए तीन चीजें जरूरी होती हैं – संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति और परकाया प्रवेश। मटियानी के पास न तो संवेदनशीलता की कमी थी और न ही अभिव्यक्ति का संकट"।1

शैलेश मटियानी का साहित्य अपने कालखण्ड का उत्कृष्ट रचना संसार है। सामाजिक विद्रूपता,मानवीय संवेदना व मानव–जीवन की गहनता का विस्तृत वर्णन उनके कथा–साहित्य में मिलता है। मानवीय संवेदना का बारीकी से वर्णन उनकी रचनाओं को महान बना है।

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

संवेदनशीलता के महारथी मटियानी ने भोगे हुए यथार्थ को जिस भाषा–शिल्प के साथ अपने साहित्य में पिरोया है वह अद्वितीय है। उनकी दृष्टि समाज के उस वर्ग पर केंद्रित रही, जिसे प्रायरू साहित्य और समाज दोनों में उपेक्षित किया जाता रहा है। यही कारण है कि मटियानी की रचनाएँ जीवन की कठोरतम परिस्थितियों में भी मनुष्य की जिजीविषा,संघर्षशीलता और मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करती है।

संवेदना का संबंध मनुष्य की अनुभूति, सहानुभूति और भाव–जगत से है। यह वह मानसिक और भावनात्मक स्थिति है, जिसके माध्यम से व्यक्ति दूसरे के सुख दुख को अनुभव करता है। साहित्य में संवदेना वह शक्ति है, जो रचना को मानवीय धरातल पर प्रदान करती है।

शैलेश मटियानी की संवेदनशीलता अनुभूतिजन्य है। उन्होंने जीवन को निकट से देखा, जिया और भोगा है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में संवेदना कृत्रिम न होकर सहज, स्वाभाविक और जीवन–सापेक्ष है। मटियानी के साहित्य में संवेदनशील मनुष्य होने का संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखता है।

किसी भी लेखक की रचना में उसकी भावनात्मकता व मार्मिकता प्रायः होती है, जो समाज की स्थिति– परिस्थिति को व्यक्त कर सामाजिक विद्रूपताओं को समझाती है। परन्तु इससे इतर जो है, वह है संवेदना, संवेदना ही रचना को सहज स्वीकार्य बनाती है और पाठक के साथ सहज रूप में तारतम्य भी बैठाती है। संवेदनशील रचना से ही जीवन व समाज के यथारूप का दर्शन संभव होता है। मटियानी के साहित्य में यह तीनों भावनात्मकता, मार्मिकता व संवेदना स्वतः ही मिलती है। उनकी रचनाएँ समाज व जीवन के यथासंभव रूप का दर्शन कराती है। मटियानी की रचनाओं में संवेदना सहज रूप से पाठक के साथ तारतम्य भी स्थापित करती है। क्षितिज शर्मा लिखते हैं, "कभी यदि रचना के माध्यम से भावुकता, मार्मिकता और संवेदना की भूमिका पर अलग से काम होगा तो शैलेश माटियानी की कहानियों उसमें बहुत सहायक सिद्ध होंगी।"2.

मटियानी के साहित्य का मूल स्वर मानवीय करुणा है। उनके पात्र जीवन के अभावों, संघर्षों और यातनाओं से जूझते दिखाई देते हैं। लेखक उनके दुःख को केवल चित्रित ही नहीं करते, बल्कि उसे आत्मसात करते हैं । उनकी रचनाओं में करुणा दया नहीं बल्कि सह–अनुभूति है।

शैलेश मटियानी का रचना संसार किसी सीमित क्षेत्र या अंचल तक नहीं है, बल्कि संपूर्ण मानवीय समाज के प्रति व्यापक दृष्टिकोण लिए है। मटियानी की रचनाएँ चाहे कुमाऊनी या बम्बईमा पृष्ठभूमि पर आधारित है, परन्तु उनकी रचनाओं का केंद्रीय कथ्य मुख्य में मानवीय संवेदना से संचालित है । मटियानी के कुमाऊं अंचल के जीवन का संवेदनशील वर्णन उनके प्रमुख उपन्यासों में देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरुप हौलदार, चिट्ठी रसैन, मुख सरोवर के हंस , एक मूठ सरसों, आदि उपन्यासों में मटियानी की मानवीय संवेदना दिखती है। हौलदार उपन्यास का प्रमुख पात्र दिव्यांग है, जिसकी कुंठित मानसिक स्थिति का वर्णन किया है। चिट्ठी रसैन, चौथी मुट्ठी, मुख–सरोवर के हंस, व एक मूठ सरसों, आदि उपन्यासों में

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

कुमाऊ अंचल की स्त्री पीडा, जो पुरुषसत्ता प्रधान व्यवस्था की देन है। संवेदनशील रूप में अभिव्यक्त किया है। मटियानी ने स्त्री की अभिशप्त नियति का मार्मिक अंकन किया है। पुरुष द्वारा किये जाने वाले स्त्री के दैहिक शोषण व अत्याचारों का संवेदनात्मक वर्णन किया है। गोपाल राय के अनुसार," 'एक मूठ सरसों' में स्त्री की व्यथा इतने सशक्त और मार्मिक रूप में प्रस्तुत की गयी है कि इसे 'दर्द की कविता' कहने की इच्छा होती है। झुटकेली (वर्णसंकर) शिशु की सामाजिक अवज्ञा और अपमान को भी उपन्यासकार ने संवेदनात्मक तीव्रता के साथ व्यक्त किया है।"3

'कोई अजनबी नहीं' उपन्यास की प्रमुख पात्र रामरती की मनोव्यथा और भटकन का मार्मिक चित्रण किया है, जो कि पुरुष समाज द्वारा देह शोषण कर, समाज से निष्कासित कर दी जाती है। 'दो बूंद जल, दलित जीवन पर आधारित उपन्यास ळें उपन्यास में देह सौदा करती पहाडी मीरासिनों का संवेदनात्मक चित्रण किया है। देह–व्यापार को विवश स्त्री की विवशता व वात्सल्य के बीच द्वंद्व का अंकन है। 'सर्पगंधा' उपन्यास में अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते पहाड़ी क्षेत्र के दलित समाज का अंकन है। मटियानी ने आरक्षण व इसके संघर्ष के प्रश्न को तर्कपूर्ण चिंतन व गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। 'गोपुली–गफूरन' व 'बावन नदियों का संगम' में संवेदनात्मक तीव्रता और सर्जनात्मक उपलब्धि पर मुख्य रूप से ध्यान देने योग्य है। 'गोपुली गफूरन' की केंद्रीय पात्र गोपुली स्त्री की अदम्य जिजीविषा,संघर्ष,आत्मविश्वास,सहनशक्ति,ममता की प्रतीक है। गोपुली एक अविस्मरणीय पात्र है। जो पुरुष समाज द्वारा प्रवंचित होती है, परन्तु हार कभी नहीं मानती। 'बावन नदियों का संगम' वेश्या जीवन पर आधारित उपन्यास है। उपन्यास में वेश्याओं और दलालों द्वारा दी कष्टकारक जिन्दगी का मार्मिकता व गहरी संवेदना के साथ चित्रण हुआ है। मटियानी का उपन्यासों में उनकी समाज के प्रति आशावादी व विश्वसनीय दृष्टिकोण मिलता है। मटियानी ने अपनी रचनाओं के पात्रों के माध्यम से उनको भीतर की मानवीय संवेदनाओं का सफलतापूर्वक अंकन किया है।

शैलेश मटियानी की कहानियों में मानवीय संवेदना व संघर्ष आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि विविध आयामों में दिखता है। मटियानी की प्रमुख कहानियों को उदाहरणस्वरुप देखा जा सकता है। मटियानी की कहानी 'चील' का केन्द्रीय पात्र 'खेलावन' अपने शराबी पिता, अभावग्रस्त मां, बेबस दादी के साथ अत्यन्त दारिद्रपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। समाज की प्रताड़ना,विषमता, व असमर्थता का बोध, असहनीय भूख से व्यथित बालक खेलावन को अपना व्यक्तित्व ही दयनीय,घृणित व डरावना लगने लगता है। 'प्यास' कहानी का पात्र 'शंकरिया' भीख मांग कर जीवन–यापन को विवश है। शंकरिया के माध्यम से मटियानी ने महानगर के उन हजारों की संख्या में भीख मांगते. माता–पिता रहित बालकों के दुःख, उनके अभिशप्त जीवन का अंकन किया है। 'भय' कहानी में भी मटियानी ने 'वह' के माध्यम से भीख मांग कर व भूख मिटाने के लिए किए जाने वाले संघर्ष का संवेदनात्मक वर्णन किया है। मटियानी ने 'मेरी प्रिय कहानियों' की भूमिका में लिखा है–"चरम नैराश्य के क्षणों में भी अपने मनुष्य

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

होने की आत्यंतिकता को स्मरण कर सकने की दुर्दांत जिजीविषा!..... और मनुष्य होने की प्रतीत ही मुझे चरम प्रतिकूल परिस्थितियों और निरुपायता एक क्षणों में भी मनुष्य की तरह सोचने को प्रेरित करती है।"4

'मिट्टी' कहानी के प्रमुख पात्र गनेशी और लालमन के संबंध 'भूख' से जुड़े हैं, जिससे एक करुण व संवेदनात्मक नमी कथा सूल के चारों तरफ बिखर जाती है। मटियानी ने स्वयं भी जीवन के संघर्षशील दिनों में भूख को अत्यंत निकट से देखा है। कहानी का पात्र लालमन कुष्ठ, रोग से ग्रसित भिखारी है, गनेशी, लालमन को गाड़ी में बैठा गाड़ी खींचता है। इस भीख पर लालमन,गनेशी व गनेशी के दो बच्चों का पालन होता है। गनेशी, लालमन के मध्य केवल मानवीय संवेदना का संबंध है। लालमन व गनेशी ने पति–पत्नी हैं,न ही प्रेमी–प्रेमिका। मानवीय संवेदना ही मानवीय संबंधों को जन्म देती है, अथवा मनुष्य का स्वार्थ उसे संबंधों से बांधता है। शैलेश मटियानी के शब्दों में," मनुष्य की तरह सोचने का अर्थ ही मनुष्य की तरह आचरण न कर पाने की अपनी असमर्थताओं की यातनाओं को भोगने के लिए अपने को अभिशप्त पाना है।"5

मटियानी की कहानियों के पात्र आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक धरातल पर संघर्षरत होते हुए मानवीय करुणा और संवेदना को न केवल बचाए रखते हैं बल्कि कालजयी पात्र भी बनते हैं– 'चील' का खेलावन व विधासागर, 'प्यास' का शंकरिया, 'मिट्टी' का गनेशी, 'मैमूद' का जद्दन, 'हारा हुआ' का गंडामल पहलवान, 'अहिंसा' का जंगेसर, 'इब्बू मलंग' का इब्बू मस्तान, 'परिवर्तन' का देवराम, 'घोड़े' के सोमगिरे बाबा, 'माता' की भगवती माता, 'दो दुःखों का एक सुख' की मृदुला कानी, 'प्रेतमुक्ति' के पाण्डेय जी, 'हत्यारे' के हरिजन', 'शरण्य की ओर' का बसंत लाल, आदि सभी पात्र विपरीत स्थितियों से लड़ते हुए अपने अस्तित्व को बचाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। शैलेश मटियानी की दृष्टि कष्ट में भी मानवीय मूल्यों पर टिकी रहती है, वे लिखते हैं, "स्मरणीय दुःख नहीं होते बल्कि स्मरणीय होती वह करुणा और संवेदनशीलता जिनका साक्षात्कार दुःखों से गुजरते हुए होता है।"6

मटियानी की संवेदना उनकी रचनाओं में भी स्पष्ट रूप से दिखती है। मटियानी जितने संवेदनशील व्यक्तित्व के थे उतनी संवेदनात्मकता उनकी रचनाओं की भाषा में भी है। मटियानी की कहानियों में संवेदना गरीब, शोषित, भूखी व त्रस्त जनता के प्रति अत्यधिक करुणा को दर्शाती है। प्रकाश मनु लिखते हैं, "इब्बू मलंग, चील, प्यास, दो दुखों का एक सुख, शरण्य की ओर, सतजुगिया, वृत्ति, ये सिर्फ कहानियों के नाम नहीं हैं, बल्कि ये वे कहानियाँ है। जिन्हें मटियानी और सिर्फ मटियानी ही लिख सकते थे, और ये वे कहानियां हैं जिनमें गरीब शोषित, सताई, भूखी नंगी और मार खाई हुई जनता के प्रति मटियानी की बेपनाह करुणा झाँकती नजर आती है।"7

मटियानी के साहित्य में आंचलिकता, सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता फैंटसी को ग्रहण किया है। आंचलिक कथा–साहित्य में लोक गाथा शिल्प को प्रमुख रूप से अपनाया है। मटियानी की रचनाओं में लोककथाओं के प्रति गहरी संवेदना मिलती है। 'एक मूठ सरसों'

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उपन्यास में 'रुपूली–घुघली चिरैया' व 'सोनपंख–घुघुत' की लोककथा, 'मुख सरोवर के हंस' में कुमाऊँ की प्रसिद्ध लोककथा 'अजित बफौला' का सृजनात्मक उपयोग उसके प्रमुख उदाहण है। 'लोक' के प्रति मटियानी की गहरी संवेदना थी जो उनके कुमाऊंनी अंचल की रचनाओं में प्रायः दिखती है। जिससे मटियानी का कथा–साहित्य अकथनीय रूप में मार्मिक व संवेदनशील बन गया है।

साहित्यकार मटियानी की रचनाएँ मानवीय संवेदना, नैतिक बोध तथा गहन करुणा की सूचक है। जो उनकी कहानियों व उपन्यासों में के पात्रों में भली–भाँति दृष्टिगोचर होती हैं। मटियानी की रचनाओं के पुरुष पात्रों की अपेक्षा स्त्री पात्र सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक, दैहिक संबंधों से निरंतर संघर्षरत होते हुए भी अधिक सजग है, जिस कारण नारी संघर्ष में उनकी लेखनी अधिक निखर कर आती है। शशिकला राय के अनुसार, "शैलेश मटियानी लिखने की भाषा' और 'मनुष्य होने की भाषा' के फर्क को अपनी आत्मा से महसूस करते हैं। इसीलिए उनकी संवेदनात्मक दृष्टि स्त्री के संघर्ष के उस पक्ष पर, बहुत गहरी पड़ती है जो सदियों से अब तक उसी रूप में विद्यमान है। स्त्री होने और मां– पत्नी–बहन होने के मध्य स्त्री निरंतर जूझती रहती है।"8

मटियानी एक कुशल साहित्यकार हुए हैं, वे अपनी रचनाओं में ही नहीं बल्कि मूल जीवन में भी संवेदना को उकेरने में पूर्णतः सफल हुए हैं। मटियानी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को अपनी लेखनी से ही कागज में जगह दी है। मटियानी के जीवन व उनकी रचनाओं की संवेदनात्मकता पर विचार करने पर यह स्पष्ट हुआ कि उनकी मानवीय संवेदना का स्वरूप किसी वर्ग विशेष के संघर्ष का नहीं है। यह संवेदना सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक,परिवेश की जटिल समस्याओं के भीतर मानवीय मूल्यों और मानवीय अनुकम्पा से दीप्त मानवीय अस्तित्व को बचाए रखने हेतु है। जिससे भिन्न–भिन्न अभावों से त्रासद मानव अपनी जिजीविषा को कायम रखता है। गिरिराज किशोर द्वारा कथित है कि, "शैलेश मटियानी मित्र तो हैं ही, रहनुमा भी है। रहनुमा और मित्र वही हो सकता है जो इतना संवेदनशील हो कि दूसरों की आकांक्षाओं और सीमाओं को पहचानकर उसके साथ संबंध बनाने की सामर्थ्य रखता हो। मटियानी ऐसे ही विलक्षण सामर्थ्य रखने वाले अद्भुत, अप्रतिम एवं असाधारण रचनाशीलता के सर्जक थे।"9

शैलेश मटियानी का साहित्य मानवीय संवेदना का सशक्त और व्यापक आख्यान है। उन्होंने समाज के उपेक्षित, पीड़ित और संघर्षरत मनुष्यों को अपनी रचनाओं के केंद्र में स्थापित कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी संवेदना में करुणा, संघर्ष, लोकजीवन, स्त्री–अनुभूति और सामाजिक यथार्थ का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है।

आज के समय में, जब मनुष्य संवेदनहीनता और आत्मकेंद्रिता की ओर बढ़ रहा है, शैलेश मटियानी का साहित्य हमें मानवीय मूल्यों, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व की याद दिलाता है। इस दृष्टि से उनका साहित्य न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक और मानवीय दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है।

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सन्दर्भ सूची -

1. डॉ. शेखर पाठक (संपा.)ः पहाड़, शैलेश माटियानी के मायने (पत्रिका)ःअमिता प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, हल्द्वानीः2001ः पृ. सं. 208।
2. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ः प्र.सं. 86।
3. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ः प्र.सं. 91।
4. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ः प्र.सं. 96।
5. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ःप्र.सं. 97।
6. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ःप्र.सं. 98।
7. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ःप्र.सं.29।
8. गोविन्द मिश्र (संपा.)ः अक्षरा, शैलेश माटियानी स्मृति विशेषांकः म.प्र., राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपालः नवम्बर दिसम्बर 2001ः प्र.सं. 101।
9. डॉ. शेखर पाठक (संपा.)ःपहाड़, शैलेश माटियानी के मायने (पत्रिका)ः अमिता प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, हल्द्वानीः2001ःपृ.सं.180।